चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	3.10.21	2	1-7

जलाने के बजाय पराली का प्रबंधन करें किसान, होंगे मालामाल

इससे न केवल उनकी आर्थिक स्थिति सुधरेगी बल्कि पर्यावरण भी प्रदूषित होने से बचेगा, भूमि की उर्वरा शक्ति को भी नहीं पहुंचेगा नुकसान

दैनिक जागरण
पराली का समाधान है समझदारी

जागरण टीम, हिसार : पराली यानि फसल अवशेष। धान की कटाई आजकल जोरों पर है। काफी किसान फसल काटने के बाद उसका निचला भाग (फसल अवशेष) खेत में ही छोड़ देते हैं और फिर इसे आग के हवाले कर अपनी अगली फसल के लिए खेत तैयार करने में जुट जाते हैं। ये पराली जलाना बेहद खतरनाक है। इससे न केवल पर्यावरण प्रदूषण होता है बल्कि जमीन की उर्वरा शक्ति भी नष्ट होती है। इस लिए किसानों को चाहिए कि वे पराली जलाने की बजाय उसका प्रबंधन करें। इससे न केवल पर्यावरण प्रदूषित होने से बचेगा बल्कि उनकी खुद की आर्थिक स्थिति भी मजबूत होगी। आइए जानते

पराली से पशुओं के लिए बनाएं पोषक चारा, उपचारित करने के बाद और बढ़ाई जा सकती पौष्टिकता

पराली पशुओं के लिए एक बेहतर चारा भी है। उपचारित करने के बाद इसकी पोषकता को और बढ़ाया जा सकता है। पशुओं के चारे में पोषक तत्वों पर काम कर रहे हिसार स्थित लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के विज्ञानी बताते हैं कि पशु पालक पराली को सामान्य चारा ही मानें। इसकी कटाई करके इसे सीधे भी पशुओं को खिलाया जा सकता है। साथ ही पराली को कुछ रसायनों के साथ उपचारित करने के बाद अच्छी गुणवत्ता और पोषक तत्वों से लैस किया जा सकता है। यूरिया से पराली का उपचार करना सबसे सस्ता पड़ता है। यूरिया से उपचार करने से उसमें सात से आठ फीसद प्रोटीन मिल जाता है। 15 से 20 फीसद पाचन क्रिया बढ़ जाती है। पराली को यूरिया से उपचारित करने के लिए चार किलोग्राम यूरिया लेना होगा। यूरिया को 35 से 40 लीटर पानी में मिलाना होगा। फिर पराली मिलाकर उसे दबाना होगा। पराली को दबाने के लिए पालीथिन सीट का भी प्रयोग कर सकते हैं। यह मिश्रण 30 दिन तक दबा के रखना है। इसमें किसी भी प्रकार से हवा नहीं जानी चाहिए। हवा जाने पर पराली काली हो सकती है या जल भी सकती है। 30 दिन बाद जब पालीथिन सीट हटाएंगे फिर उस मिश्रण को सुखाना है। इसके बाद पूरे साल तक इस मिश्रण को पशुओं को खिला सकते हैं।

'पराली प्रबंधन को लेकर किसान विज्ञानियों की सलाह लें। विज्ञानियों द्वारा की गई सिफारिशें उन्हें लाभ देंगी। जलाने की बजाय वास्तव में पराली का ठीक से प्रबंधन हो तो यह खेतों को लाभ पहुंचाएगी। इससे किसानों की आर्थिक स्थिति भी मजबूत होगी। प्रो बीआर कांबोज, कुलपति, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय।

इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से धान वाले खेत में करें आलू की बिजाई

धान की पराली के प्रबंधन का इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से हल निकाला गया है। इसके प्रयोग से पराली को बिना जलाए खेत के अंदर ही प्रयोग कर आलू की बिजाई की जा सकेगी। इस पराली प्रबंधन तकनीक को अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान प्रोजेक्ट (आलू) पहले ही स्वीकृति दे चुका है। इस तकनीक को उन क्षेत्रों के लिए सिफारिश किया गया है जहां किसान धान की फसल के बाद आलू की बिजाई करते हैं। पराली प्रबंधन की इस इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक को अपनाकर किसान एक ओर जहां फसल और भूमि की उर्वरा शक्ति भी कायम रहेगी। धान की फसल की कटाई के बाद और आलू बोने से पहले धान की फसल के अवशेषों को अच्छी तरह से ट्रैक्टर चालित पैडी स्ट्रा चापर एवं सह स्प्रेडर के साथ खेत में फैला देना चाहिए। फिर 50 किलोग्राम यूरिया प्रति हेक्टेयर के हिसाब से छिड़काव के बाद 500 लीटर प्रति हेक्टेयर डीकंपोजर और 500 लीटर प्रति हेक्टेयर गोबर घोल का छिड़काव करें। इसके बाद डिस्क हैरो और रोटावेटर की सहायता से जुताई करते हुए पूरे खेत में मिला देना चाहिए। आलू की फसल के लिए खेत तैयार हो जाएगा, फसल

50 कंप्रेस्ड बायोगैस प्लांट स्थापित किए जाएंगे

हर साल फसल अवशेषों को जलाने से पैदा हो रही दिक्कतों के समाधान को लेकर हरियाणा सरकार एक महत्वाकांक्षी योजना पर तेजी से काम कर रही है। आगामी एक साल में हरियाणा के अलग-अलग स्थानों पर 50 कंप्रेस्ड बायोगैस प्लांट स्थापित किए जाएंगे। इन प्लांटों में पराली का इस्तेमाल होगा। इन प्लांटों से निकलने वाली 3212 मिलियन मीट्रिक टन गैस को पेट्रोलियम कंपनियां खरीदेंगी और इसका इस्तेमाल वाहनों में पेट्रोल-डीजल के विकल्प के तौर पर किया जाएगा। इससे न केवल पराली का समाधान होगा, बल्कि प्रदूषण भी कम होगा।

आधुनिक कृषि यंत्रों से कर सकते पराली का बेहतर इस्तेमाल

आधुनिक कृषि यंत्रों द्वारा पराली का उचित प्रबंधन किया जा सकता है। फसल अवशेषों को रोटावेटर, चौपर, मलचर से बारीक टुकड़ों में काटकर नष्ट किया जा सकता है। यह खाद का काम करेगा। धान के खड़े फानों में हैप्पी सीडर व जीरो टील व डीएसआर द्वारा गेहूं की सीधी बिजाई की जा सकती है। सरकार विभिन्न कृषि यंत्रों पर किसानों को 80 फीसद तक छूट दे रही है ताकि किसान कृषि यंत्रों

पराली प्रबंधन के लिए सरकारी प्रोत्साहन

जो किसान स्ट्रा बेलर द्वारा पराली की गांठ/बेल बनाकर या बनवाकर उसका निष्पादन किसी सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम व अन्य औद्योगिक इकाइयों में करेगा, उसे 1000 रुपये प्रति एकड़ के हिसाब से प्रोत्साहन राशि दी जाएगी। यह राशि 50 क्विंटल एवं 20 क्विंटल प्रति एकड़ पराली उत्पादन को मानते हुए दी जाएगी। इस योजना के लिए सरकार ने 230 करोड़ रुपये का बजट तय किया है। इसके लिए किसान कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के पोर्टल agriharyana.gpv.in पर अपना पंजीकरण करवाएं। टोल फ्री नंबर 1800 180 2117 पर भी संपर्क किया जा सकता है। इस पोर्टल पर किसान और उद्योग पराली की गांठों/बेलों का क्रय-विक्रय कर सकते हैं। वर्ष 2020-21 में 24, 409 किसान पोर्टल

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
The Tribune	4-10-21	2	7-8

AGRICULTURAL VARSITY SIGNS MoUs

Hisar: Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (CCSHAU) has signed MoUs with two major companies for promoting technology commercialisation under the public private partnership. University Vice-Chancellor Professor BR Kamboj said it was the endeavour of the university to provide advanced varieties and techniques developed by scientists, to farmers. Under the MoU, the University developed MH 1142 of mung, CSV 44 F of Jowar and RH 725 of Mustard varieties. The companies will prepare the seeds of these varieties and send them to the farmers so that the farmers can get reliable seeds of improved varieties and their yield can increase.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	5-10-21	5	1-4

कपास में गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप चिंता का विषय, उठाने होंगे ठोस कदम : प्रोफेसर काम्बोज

हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों व निजी बीज कंपनी धारकों ने गुलाबी सुंडी के नियंत्रण व प्रबंधन लेकर किया मंथन

हिसार, 3 अक्तूबर (देवानंद सोनी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप किसानों व कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है। इसके समाधान के लिए ठोस कदम उठाने होंगे ताकि किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके। वे विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों व निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों के लिए आयोजित एक दिवसीय सेमिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। सेमिनार के दौरान गुलाबी सुंडी के उचित नियंत्रण व प्रबंधन को लेकर भविष्य की रूपरेखा तैयार करने के लिए गहन मंथन किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि कपास की फसल में गुलाबी सुंडी का प्रकोप बढ़ता जा रहा है जिसके नियंत्रण के लिए किसान जरूरत से ज्यादा अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग कर रहा है जो चिंता का विषय है। इसलिए वैज्ञानिकों को जैविक कीटनाशकों व अन्य कीट प्रबंधन के उपायों को खोजना होगा और हितधारकों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे तभी किसान को बचाया जा सकता है। उन्होंने कहा किसानों व दवा विक्रेताओं को फफूंदनाशकों व कीटनाशकों के मिश्रण संबंधी प्रयोग को लेकर खंड स्तर पर जाकर जागरूक करना होगा ताकि इसका अंधाधुंध प्रयोग रोका जा सके और किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके।

हिसार : सेमिनार को संबोधित करते कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज व मौजूद अन्य।

गुलाबी सुंडी के नियंत्रण व प्रबंधन के लिए दिए महत्वपूर्ण सुझाव : अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने वर्तमान समय में गुलाबी सुंडी को स्थिति को लेकर विस्तारपूर्वक चर्चा करते हुए इसके प्रबंधन के बारे में भी गहनता से विचार-विमर्श किया। राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. पी.एस. शेखावत ने राजस्थान में और पीएयू लुधियाना से डॉ. विजय कुमार ने पंजाब में कपास की मौजूदा स्थिति को लेकर अवगत कराया। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के संयुक्त निदेशक (कपास) डॉ. आर.पी. सिहाग ने विभिन्न कंपनियों के कपास के बीजों की जानकारी दी व हरियाणा सरकार की ओर से चलाई जा रही किसान कल्याणकारी योजनाओं के बारे में बताया। भारत सरकार के क्षेत्रीय कपास अनुसंधान केंद्र, सिरसा के निदेशक डॉ. एस.के. वर्मा ने उत्तर भारत में कपास की समस्याओं व उनके प्रबंधन को लेकर चर्चा की। इसी दौरान निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों ने भी गुलाबी सुंडी के नियंत्रण और प्रबंधन को लेकर महत्वपूर्ण सुझाव दिए। सेमिनार के समापन पर सभी के सुझावों को एकत्रित कर गुलाबी सुंडी को लेकर भविष्य की रणनीति तैयार करने के लिए आह्वान किया। सेमिनार में विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास, डॉ. नीरज, डॉ. सतीश खोखर, डॉ. अनिल यादव सहित कृषि वैज्ञानिकों एवं कृषि विभाग के अधिकारियों ने हिस्सा लिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	5-10-21	2	2-6

बारिश के बाद अब फसलों को बचाना चुनौती

कपास की फसल में लाल कीड़े का प्रकोप

» दवाई का स्प्रे भी बेअसर, फसल को भारी नुक्सान की बढ़ी संभावना, कृषि अधिकारियों से इस कीड़े को खत्म करने के लिए मांगी मदद

हिसार/बास, 3 अक्तूबर (ब्यूरो/पंकेस): बारिश के बाद अब कपास की फसल में लाल कीड़े का प्रकोप बढ़ गया है। जिससे किसान काफी परेशान नजर आ रहे हैं। हालांकि कृषि विभाग के अधिकारी किसानों को समय-समय पर कपास को रोग से बचाने के लिए जरूरी सलाह दे रहे हैं। किसानों ने बताया कि कपास के टिंडे में लाल रंग का कीड़ा लग गया है। ऐसे में यह टिंडा पूरी तरह से नहीं खिल पा रहा है। जिससे फसल में नुक्सान की संभावना भी बढ़ गई है। दवाई का स्प्रे करने के बाद भी यह कीड़ा नहीं मर रहा है। किसानों को कृषि विभाग के अधिकारियों से इस कीड़े को खत्म करने में उनकी मदद की गुहार लगाई है।

किसान रामकेश सिवाच, राजेन्द्र ढांडा, हरिकिशन, कुलदीप सिंह, नरेश कुमार, जितेन्द्र ढांडा, ईश्वर सिंह, सत्यवान, अजमेर, पाल सिंह, बिजेन्द्र इत्यादि ने बताया कि इस बार कपास की फसल में पहले तो बरसात की मार हो गई और अब फसल को लाल किले में अपनी चपेट में ले लिया है। यह कीड़ा अंडे के अंदर घुसकर टिंडे को खिलने नहीं देता और उसको खराब कर देता है। फिर वह टूट कर नीचे जमीन पर गिर जाता है। इस बार कपास की फसल खराब हो गई है जिसके कारण किसानों को भारी नुक्सान हो रहा है। उन्होंने सरकार व प्रशासन से प्रति एकड़ 40 हजार रुपये मुआवजे की मांग की है।

सेमिनार को संबोधित करते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज व अपनी फसल को देखता बुडाना का किसान।।

नारनौंद एरिया के इन गांवों में फसल प्रभावित

नारनौंद क्षेत्र के गांव गुराना, हैबतपुर, खेड़ी जालब, खेड़ी लोहचब, कापड़ो, कोथ कलां, कोथ खुर्द, गैबीनगर, नाडा, मिर्चपुर, मिलकपुर, राखी शाहपुर, राखी खास, गामडा, बुडाना, मोठ रांगडान, मोठ करनैल, लोहारी राघो, डाटा, मसूदपुर, पेटवाड़, खांडा खेड़ी इत्यादि गांवों में बरसात व लाल कीड़े की वजह से कपास की फसल में काफी नुक्सान हुआ है।

वहीं नारनौंद के कृषि अधिकारी रमेश वर्मा ने बताया कि किसानों ने एस.डी.ओ. कार्यालय में कपास की फसल में नुक्सान की शिकायत दी हुई है। सरकार की तरफ से भी स्पेशल गिरदावरी के आदेश हुए हैं। गिरदावरी करवाई जाएगी। जिसमें जितनी फसल खराब पाई जाती है उसकी रिपोर्ट तैयार कर सरकार को भेज दी जाएगी। टिंडे के अंदर काली कपास निकलने की दूसरी वजह है। अगर फसल में काली कपास निकलने की शिकायत है तो किसान प्लानोफिक्स दवाई का छिड़काव कर सकते हैं।

वैज्ञानिक कर रहे गहन मंथन

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप किसानों व कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है। इसके समाधान के लिए ठोस कदम उठाने होंगे ताकि किसान को आर्थिक नुक्सान से बचाया जा सके। वे विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों व निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों के लिए आयोजित एक दिवसीय सेमिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। सेमिनार के दौरान गुलाबी सुंडी के उचित नियंत्रण व प्रबंधन को लेकर भविष्य की रूपरेखा तैयार करने के लिए गहन मंथन किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि कपास की फसल में गुलाबी सुंडी का प्रकोप बढ़ता जा रहा है जिसके नियंत्रण के लिए किसान जरूरत से ज्यादा अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग कर रहा है जो चिंता का विषय है। इसलिए वैज्ञानिकों को जैविक कीटनाशकों व अन्य कीट प्रबंधन के उपायों को खोजना होगा और हितधारकों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे तभी किसान को बचाया जा सकता है। उन्होंने कहा किसानों व दवा विक्रेताओं को फफूंदनाशकों व कीटनाशकों के मिश्रण संबंधी प्रयोग को लेकर खंड स्तर पर जाकर जागरूक करना होगा ताकि इसका अंधाधुंध प्रयोग रोका जा सके और किसान को आर्थिक नुक्सान से बचाया जा सके।

विस्तारपूर्वक हुई चर्चा

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने वर्तमान समय में गुलाबी सुंडी की स्थिति को लेकर विस्तारपूर्वक चर्चा करते हुए इसके प्रबंधन के बारे में भी गहनता से विचार-विमर्श किया। राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ.पी.एस. शेखावत ने राजस्थान में और पीएयू लुधियाना से डॉ. विजय कुमार ने पंजाब में कपास की मौजूदा स्थिति को लेकर अवगत कराया। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के संयुक्त निदेशक (कपास) डॉ. आर.पी. सिहाग ने विभिन्न कंपनियों के कपास के बीजों की जानकारी दी व हरियाणा सरकार की ओर से चलाई जा रही किसान कल्याणकारी योजनाओं के बारे में बताया। भारत सरकार के क्षेत्रीय कपास अनुसंधान केंद्र, सिरसा के निदेशक डॉ. एस.के. वर्मा ने उत्तर भारत में कपास की समस्याओं व उनके प्रबंधन को लेकर चर्चा की। सेमिनार में विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास, डॉ. नीरज, डॉ. सतीश खोखर, डॉ. अनिल यादव सहित कृषि वैज्ञानिकों एवं कृषि विभाग के अधिकारियों ने हिस्सा लिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जागरण उजाला	5-10-21	2	6-8

कपास में गुलाबी सूंडी का बढ़ रहा प्रकोप

सेमीनार में वीसी थे मुख्य अतिथि, एचएयू के वैज्ञानिकों ने जताई चिंता

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सूंडी का बढ़ता प्रकोप किसानों व कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है।

गुलाबी सूंडी के नियंत्रण व प्रबंधन को लेकर किया मंथन

इसके समाधान के लिए ठोस कदम उठाने होंगे ताकि किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके। वे विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों व निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों के लिए आयोजित एक दिवसीय सेमिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। सेमिनार के दौरान गुलाबी सूंडी के उचित नियंत्रण व प्रबंधन को लेकर भविष्य की रूपरेखा तैयार करने के लिए गहन मंथन किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि कपास की फसल में गुलाबी सूंडी का प्रकोप बढ़ता जा रहा है, जिसके नियंत्रण के लिए किसान जरूरत से ज्यादा अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग कर रहा है जो चिंता का विषय है।

एचएयू में आयोजित बैठक के दौरान मौजूद अधिकारी। संवाद

गुलाबी सूंडी नियंत्रण व प्रबंधन के लिए दिए सुझाव

अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने गुलाबी सूंडी की स्थिति को लेकर चिंता जताई। राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. पीएस शेखावत ने राजस्थान में और पीएयू लुधियाना से डॉ. विजय कुमार ने पंजाब में कपास की मौजूदा स्थिति को लेकर अवगत कराया। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के संयुक्त निदेशक (कपास) डॉ. आरपी सिहाग ने विभिन्न कंपनियों के कपास के बीजों की जानकारी दी। निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों ने भी गुलाबी सुंडी के नियंत्रण और प्रबंधन को लेकर महत्वपूर्ण सुझाव दिए। सेमिनार में विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास, डॉ. नीरज, डॉ. सतीश खोखर, डॉ. अनिल यादव सहित कृषि वैज्ञानिकों एवं कृषि विभाग के अधिकारियों ने हिस्सा लिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	5.10.21	3	3-4

कपास में गुलाबी सुंडी के बढ़ते प्रकोप को लेकर वैज्ञानिकों ने किया मंथन

एचएयू के वीसी ने कहा- उठाने होंगे ठोस कदम

भास्कर न्यूज | हिसार

एचएयू के वीसी प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप किसानों व कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है। इसके समाधान के लिए ठोस कदम उठाने होंगे ताकि किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके। वे विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों व निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों के लिए आयोजित एक दिवसीय सेमिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। सेमिनार में गुलाबी सुंडी के उचित नियंत्रण व प्रबंधन को लेकर भविष्य की रूपरेखा तैयार करने के लिए गहन मंथन किया गया।

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने वर्तमान समय में गुलाबी सुंडी की स्थिति को लेकर विस्तारपूर्वक चर्चा करते हुए इसके प्रबंधन के बारे में भी गहनता से विचार-विमर्श किया। राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. पीएस शेखावत ने राजस्थान में और पीएयू लुधियाना से डॉ. विजय कुमार ने कपास की मौजूद स्थिति के बारे में बताया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	5-10-21	4	2-4

कपास में गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप चिंता का विषय

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कुलपति प्रो. बीआर कांबोज के नेतृत्व में गुलाबी सुंडी रोग पर मंथन करते विज्ञानी। ● विज्ञप्ति

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों के विज्ञानियों, कृषि अधिकारियों व निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों के लिए आयोजित एक दिवसीय मंथन हुआ। जिसमें कुलपति प्रो बीआर काम्बोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप किसानों व कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है। इसके समाधान के लिए ठोस कदम उठाने होंगे ताकि किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके। सेमिनार के दौरान गुलाबी सुंडी के उचित नियंत्रण व प्रबंधन को लेकर भविष्य की रूपरेखा तैयार करने के लिए गहन मंथन किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि कपास की फसल में गुलाबी सुंडी का प्रकोप बढ़ता जा रहा है जिसके नियंत्रण के लिए किसान जरूरत से ज्यादा अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग कर रहा है जो चिंता का विषय है। इसलिए विज्ञानियों को जैविक कीटनाशकों व अन्य कीट प्रबंधन के उपायों को खोजना होगा और हितधारकों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे तभी किसान को बचाया जा सकता है। किसानों व दवा विक्रेताओं को फफूंदनाशकों व कीटनाशकों के मिश्रण संबंधी प्रयोग को लेकर खंड स्तर पर जाकर जागरूक करना होगा ताकि इसका अंधाधुंध प्रयोग रोका जा सके और किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
एचआर ब्रेकिंग न्यूज	3.10.2021	---	---

हकृवि ने ज्वार, सरसों व मूंग की उन्नत किस्मों को किसानों तक पहुचानें के लिए के लिए किया नामी कंपनियों से समझौता

एचआर ब्रेकिंग न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों के बीज अब न केवल हरियाणा बल्कि देश के अन्य प्रदेशों में भी किसानों को आसानी से उपलब्ध हो जाएंगे। इसके लिए विश्वविद्यालय ने पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप के तहत तकनीकी व्यवसायीकरण को बढ़ावा देते हुए देश की दो प्रमुख कंपनियों से समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा कि जब तक विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया शोध किसानों तक ज्यादा से ज्यादा पहुंचे ताकि उन्हें उन्नत किस्मों का बीज व तकनीक समय पर उपलब्ध हो सके। इसलिए इस तरह के समझौतों पर हस्ताक्षर कर विश्वविद्यालय का प्रयास है कि यहां से विकसित उन्नत किस्मों व तकनीकों को अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचाया जा सके। इसके लिए विश्वविद्यालय निरंतर प्रयासरत है। समझौते के तहत विश्वविद्यालय द्वारा विकसित मुंग की एमएच 1142, ज्वार की सीएसवी 44 एफ व सरसों की आरएच 725 किस्मों के लिए हुआ समझौता है। इन किस्मों का बीज तैयार कर कंपनियां किसानों तक पहुंचाएंगी ताकि किसानों को उन्नत किस्मों का विश्वसनीय बीज मिल सके और उनकी पैदावार में इजाफा हो सके।

समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर के दौरान मौजूद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज, कंपनी के अधिकारी व विश्वविद्यालय के अधिकारी।

इन कंपनियों के साथ हुआ है समझौता

दक्षिण भारत की महाराष्ट्र के पुणे की कंपनी एग्री स्टार (नु सिक एग्री टेक प्राइवेट लिमिटेड, पुणे) के साथ सरसों की किस्म आरएच 725 के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। कंपनी की तरफ से डॉ. देवराज आर्य, वाइस प्रेसिडेंट फार्म सोल्यूशन ने हस्ताक्षर किए। दूसरा मैसर्ज सेव एग्रीटेक, गुरुग्राम के साथ समझौता हुआ है जिसमें कंपनी की ओर से डॉ. सत्यपाल ने हस्ताक्षर किए। इस कंपनी के साथ मुंग की एमएच 1142 व ज्वार की सीएसवी 44 एफ के लिए समझौता हुआ है। इन दोनों के साथ विश्वविद्यालय की ओर से समझौता ज्ञापन पर एचएयू की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने हस्ताक्षर किए हैं।

विश्वविद्यालय के साथ किसानों को भी होगा फायदा

समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर होने के बाद अब कंपनी विश्वविद्यालय को लाइसेंस फीस अदा करेगी जिसके तहत उसे बीज का उत्पादन व विपणन करने का अधिकार प्राप्त होगा। इसके बाद किसानों को भी उन्नत किस्मों का बीज मिल सकेगा। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इन किस्मों में अन्य किस्मों की तुलना में अधिक खनिज व पैदावार मिलती है तथा ये रोगरोधी भी हैं।

ये रहे मौजूद

समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करते समय विश्वविद्यालय के कुलपति के ओएसडी एवं स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. अतुल ढींगड़ा, अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसनिवास ढांडा, डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. अनिल यादव, डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. राजेश यादव, डॉ. विनोद कुमार, डॉ. पम्मी कुमारी आदि मौजूद रहे।

ये है इन किस्मों की खासियत

ज्वार की किस्म में हरे चारे की मात्रा अधिक होती है, यह स्टेम बोरर बीमारी के प्रति सहनशील है, यह गिरती भी कम है और सूखे चारे की मात्रा भी अन्य किस्मों की तुलना में अधिक होती है। इन्हीं गुणों के चलते अन्य राज्यों में इस किस्म की डिमांड अधिक है। सरसों की किस्म की फलियां अन्य किस्मों की तुलना में लंबी व दानों की मात्रा अधिक होती है। साथ ही दानों का आकार भी बड़ा होता है और तेल की मात्रा भी ज्यादा होती है। इसी प्रकार मूंग की किस्म पीला मौजेक, पत्ता झुरी, पत्ता मरोड़ जैसे विषाणु रोगों के प्रति रोगरोधी सफेद चूर्णी एवं एंथ्राक्नोस जैसे फफूंद रोगों के प्रति मध्यम रोगरोधी है। साथ ही थ्रिप्स, सफेद मक्खी जैसे रस चूसक कीट व अन्य फली छेदक कीटों का प्रभाव भी बहुत कम होता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं न्यूज	3.10.2021	--	--

हरियाणा, पंजाब और राजस्थान के कृषि वैज्ञानिकों ने शुरु किया मंथन

कपास-नरमा में बढ़ा सुंडी का प्रकोप, किसान चिंतित

सच कहूं/संदीप सिंहमार

हिसार। फसलों पर लगातार मौसमी मार का बुरा असर होता जा रहा है। सितंबर के महीने में हुई बारिश की वजह से नरमा/कपास में जड़गलन रोग से अभी छुटकारा नहीं मिल पाया था कि अब नरमा/कपास में अचानक गुलाबी सुंडी का प्रकोप बढ़ गया है। गुलाबी सुंडी के हमले से किसानों के साथ साथ विभिन्न राज्यों के कृषि वैज्ञानिक भी चिंता में है। गुलाबी सुंडी से फसलों को बचाने के लिए हरियाणा पंजाब के राजस्थान के कृषि वैज्ञानिकों ने गहन मंथन करना शुरु कर दिया है। इसी विषय पर हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के उपकुलपति प्रोफेसर बीआर कंबोज की अध्यक्षता में सेमिनार का आयोजन किया गया। इस आयोजन में हरियाणा, पंजाब व राजस्थान के कृषि अधिकारी व कृषि वैज्ञानिक शामिल हुए। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप किसानों व कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है। इसके समाधान के लिए ठोस कदम उठाने होंगे ताकि किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके।

■ अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग भी पहुंचा रहा नुकसान

इस दौरान दौरान गुलाबी सुंडी के उचित नियंत्रण व प्रबंधन को लेकर भविष्य की रूपरेखा तैयार करने के लिए गहन मंथन किया गया। प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा कि कपास की फसल में गुलाबी सुंडी का प्रकोप बढ़ता जा रहा है जिसके नियंत्रण के लिए किसान जरूरत से ज्यादा अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग कर रहा है जो चिंता का विषय है। इसलिए वैज्ञानिकों को जैविक कीटनाशकों व अन्य कीट प्रबंधन के उपायों की खोजना होगा और हितधारकों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे तभी किसान को बचाया जा सकता है। उन्होंने कहा किसानों व दवा विक्रेताओं को फफूंदनाशकों व कीटनाशकों के मिश्रण संबंधी प्रयोग को लेकर खंड स्तर पर जाकर जागरूक करना होगा ताकि इसका अंधाधुंध प्रयोग रोका जा सके और किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके।

■ नियंत्रण व प्रबंधन के लिए दिए महत्वपूर्ण सुझाव

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने वर्तमान समय में गुलाबी सुंडी की स्थिति को लेकर विस्तारपूर्वक चर्चा करते हुए इसके प्रबंधन के बारे में भी गहनता से विचार-विमर्श किया। राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. पी.एस. शेखावत ने राजस्थान में और पीएयू लुधियाना से डॉ. विजय कुमार ने पंजाब में कपास की मौजूदा स्थिति को लेकर अवगत कराया। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के संयुक्त निदेशक(कपास) डॉ. आर.पी. सिहाग ने विभिन्न कंपनियों के कपास के बीजों की जानकारी दी व हरियाणा सरकार की ओर से चलाई जा रही किसान कल्याणकारी योजनाओं के बारे में बताया। भारत सरकार के क्षेत्रीय कपास अनुसंधान केंद्र, सिरसा के निदेशक डॉ. एस.के. वर्मा ने उत्तर भारत में कपास की समस्याओं व उनके प्रबंधन को लेकर चर्चा की। इसी दौरान निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों ने भी गुलाबी सुंडी के नियंत्रण और प्रबंधन को लेकर महत्वपूर्ण सुझाव दिए। सेमिनार में विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास, डॉ. नीरज, डॉ. सतीश खोखर, डॉ. अनिल यादव सहित कृषि वैज्ञानिकों एवं कृषि विभाग के अधिकारियों ने हिस्सा लिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जीवन आधार	3.10.2021	--	--

हकृवि ने ज्वार, सरसों व मूंग की उन्नत किस्मों को किसानों तक पहुचानें के लिए के लिए किया नामी कंपनियों से समझौता

By Rajesh News Admin

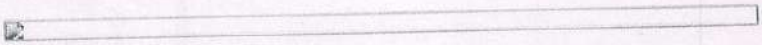

मूंग की एमएच 1142 व ज्वार की सीएसवी 44 एफ व सरसों की आरएच 725 किस्मों के लिए हुआ समझौता

हिसार,

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों के बीज अब न केवल हरियाणा बल्कि देश के अन्य प्रदेशों में भी किसानों को आसानी से उपलब्ध हो जाएंगे। इसके लिए विश्वविद्यालय ने पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप के तहत तकनीकी व्यवसायीकरण को बढ़ावा देते हुए देश की दो प्रमुख कंपनियों से समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया शोध किसानों तक ज्यादा से ज्यादा पहुंचना चाहिए ताकि उन्हें उन्नत किस्मों का बीज व तकनीक समय पर उपलब्ध हो सके। इसलिए इस तरह के समझौतों पर हस्ताक्षर कर विश्वविद्यालय का प्रयास है कि यहां से विकसित उन्नत किस्मों व तकनीकों को अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचाया जा सके। इसके लिए विश्वविद्यालय निरंतर प्रयासरत है। समझौते के तहत विश्वविद्यालय द्वारा विकसित मूंग की एमएच-1142, ज्वार की सीएसवी 44 एफ व सरसों की आरएच 725 किस्मों के लिए हुआ समझौता है। इन किस्मों का बीज तैयार कर कंपनियां किसानों तक पहुंचाएंगी ताकि किसानों को उन्नत किस्मों का विश्वसनीय बीज मिल सके और उनकी पैदावार में इजाफा हो सके।

इन कंपनियों के साथ हुआ है समझौता

दक्षिण भारत की महाराष्ट्र के पूणे की कंपनी एग्रो स्टार (यू लिंक एग्री टेक प्राइवेट लिमिटेड, पूणे) के साथ सरसों की किस्म आरएच 725 के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। कंपनी की तरफ से डॉ. देवराज आर्य, वाइस प्रेसीडेंट फार्म सोल्यूशन ने हस्ताक्षर किए। दूसरा मैसर्ज देव एग्रीटेक, गुरूग्राम के साथ समझौता हुआ है जिसमें कंपनी की ओर से डॉ. यशपाल ने हस्ताक्षर किए। इस कंपनी के साथ मूंग की एमएच 1142 व ज्वार की सीएसवी 44 एफ के लिए समझौता हुआ है। इन दोनों के साथ विश्वविद्यालय की ओर से समझौता ज्ञापन पर एचएयू की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने हस्ताक्षर किए हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

हिन्दुस्थान 3.10.21 --

हिन्दुस्थान समाचार
589k Followers

कपास में गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप रोकने को उठाने होंगे ठोस कदम : कुलपति

हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के वैज्ञानिकों ने किया मंथन

हिसार, 3 अक्टूबर (हि स.)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने कहा है कि देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप किसानों व कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है। इसके समाधान के लिए ठोस कदम उठाने होंगे ताकि किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके।

कुलपति कम्बोज रविवार को विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब व राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों व निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों के लिए आयोजित एक दिवसीय सेमिनार को संबोधित कर रहे थे। सेमिनार के दौरान गुलाबी सुंडी के उचित नियंत्रण व प्रबंधन को लेकर भविष्य की रूपरेखा तैयार करने के लिए गहन मंथन किया गया।

मुख्य अतिथि ने कहा कि कपास की फसल में गुलाबी सुंडी का प्रकोप बढ़ता जा रहा है जिसके नियंत्रण के लिए किसान जरूरत से ज्यादा अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग कर रहा है जो चिंता का विषय है। इसलिए वैज्ञानिकों को जैविक कीटनाशकों व अन्य कीट प्रबंधन के उपायों को खोजना होगा और हितधारकों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे तभी किसान को बचाया जा सकता है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने वर्तमान समय में गुलाबी सुंडी की स्थिति को लेकर विस्तारपूर्वक चर्चा करते हुए इसके प्रबंधन के बारे में भी गहनता से विचार-विमर्श किया। राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. पीएल शेखावत ने राजस्थान में और पीएयू लुधियाना से डॉ. विजय कुमार ने पंजाब में कपास की मौजूदा स्थिति को लेकर अवगत कराया।

हिन्दुस्थान समाचार/राजेश्वर/संजीव

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	04.10.21	--	--

हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों ने किया गहन मंथन

कपास में गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप चिंता का विषय : कुलपति

हिसार, 3 अक्तूबर (सुरेंद्र सोढी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप किसानों व कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है। इसके समाधान के लिए ठोस कदम उठाने होंगे ताकि किसान को आर्थिक नुक्सान से बचाया जा सके। कुलपति रविवार को विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों व निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों के लिए आयोजित एक दिवसीय सेमिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। सेमिनार के दौरान गुलाबी सुंडी के उचित नियंत्रण व प्रबंधन को लेका भविष्य की रूपरेखा तैयार करने के लिए गहन मंथन किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि कपास की फसल में गुलाबी सुंडी का प्रकोप बढ़ता जा रहा है जिसके नियंत्रण के लिए किसान जरूरत से ज्यादा अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग कर रहा है जो चिंता का विषय है। इसलिए वैज्ञानिकों को जैविक कीटनाशकों व अन्य कीट प्रबंधन के उपायों को खोजना होगा और हितधारकों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे तभी किसान को बचाया जा सकता है। उन्होंने कहा किसानों व दवा विक्रेताओं को फफूंदनाशकों व कीटनाशकों के मिश्रण संबंधी प्रयोग को लेकर खंड स्तर पर जाकर जागरूक करना होगा ताकि इसका अंधाधुंध प्रयोग रोका जा सके और किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके। इसी दौरान निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों ने भी गुलाबी सुंडी के नियंत्रण और प्रबंधन को लेकर महत्वपूर्ण सुझाव दिए। सैमीनार के समापन पर सभी के सुझावों को एकत्रित कर गुलाबी सुंडी को लेकर भविष्य की रणनीति तैयार करने के लिए आह्वान किया। सेमिनार में विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास, डॉ. नीरज, डॉ. सतीश खोखर, डॉ. अनिल यादव सहित कृषि वैज्ञानिकों एवं कृषि विभाग के अधिकारियों ने हिस्सा लिया।

सैमीनार को संबोधित करते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज व मौजूद अन्य।

गुलाबी सुंडी पर दिए महत्वपूर्ण सुझाव

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने वर्तमान समय में गुलाबी सुंडी को स्थिति को लेकर विस्तारपूर्वक चर्चा करते हुए इसके प्रबंधन के बारे में भी गहनता से विचार-विमर्श किया। राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. पी.एस. शेखावत ने राजस्थान में और पी.ए.यू. लुधियाना से डॉ. विजय कुमार ने पंजाब में कपास की मौजूद स्थिति को लेकर अवगत कराया। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के संयुक्त निदेशक(कपास) डॉ. आर.पी. सिहाग ने विभिन्न कंपनियों के कपास के बीजों की जानकारी दी व हरियाणा सरकार की ओर से चलाई जा रही किसान कल्याणकारी योजनाओं के बारे में बताया। भारत सरकार के क्षेत्रीय कपास अनुसंधान केंद्र, सिरसा के निदेशक डॉ. एस.के. वर्मा ने उत्तर भारत में कपास की समस्याओं व उनके प्रबंधन को लेकर चर्चा की।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	03.10.2021	--	---

हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों व निजी बीज कंपनी धारकों ने गुलाबी सुंडी के नियंत्रण व प्रबंधन लेकर किया गहन मंथन

कपास में गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप चिंता का विषय, उठाने होंगे ठोस कदम : प्रो. काम्बोज

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में लगातार गुलाबी सुंडी का बढ़ता प्रकोप किसानों व कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है। इसके समाधान के लिए ठोस कदम उठाने होंगे ताकि किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके। वे विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों व निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों के लिए आयोजित एक दिवसीय सेमिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। सेमिनार के दौरान गुलाबी सुंडी के उचित नियंत्रण व प्रबंधन को लेकर भविष्य की रूपरेखा तैयार करने के लिए गहन मंथन किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि कपास की फसल में गुलाबी सुंडी का प्रकोप बढ़ता जा रहा है जिसके नियंत्रण के लिए किसान जरूरत से ज्यादा अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग कर रहा है जो चिंता का विषय है। इसलिए वैज्ञानिकों को जैविक कीटनाशकों व अन्य कीट प्रबंधन के उपायों को खोजना होगा और हितधारकों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे तभी किसान को बचाया जा सकता है। उन्होंने कहा किसानों व दवा विक्रेताओं को फफूंद-नाशकों व कीटनाशकों के मिश्रण संबंधी प्रयोग को लेकर खंड स्तर पर जाकर जागरूक करना होगा ताकि इसका अंधाधुंध प्रयोग रोका जा सके और किसान को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके।

गुलाबी सुंडी के नियंत्रण व प्रबंधन के लिए दिए महत्वपूर्ण सुझाव

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने वर्तमान समय में गुलाबी सुंडी की स्थिति को लेकर विस्तारपूर्वक चर्चा करते हुए इसके प्रबंधन के बारे में भी गहनता से विचार-विमर्श किया। राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. पी.एस. शेखावत ने राजस्थान में और पीएयू लुधियाना से डॉ. विजय कुमार ने पंजाब में कपास की मौजूदा स्थिति को लेकर अवगत कराया। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के संयुक्त निदेशक (कपास) डॉ. आर.पी. सिहाग ने विभिन्न कंपनियों के कपास के बीजों की जानकारी दी व हरियाणा सरकार की ओर से चलाई जा रही किसान कल्याणकारी योजनाओं के बारे में बताया। भारत सरकार के क्षेत्रीय कपास अनुसंधान केंद्र, सिरसा के निदेशक डॉ. एस.के. वर्मा ने उत्तर भारत में कपास की समस्याओं व उनके प्रबंधन को लेकर चर्चा की। इसी दौरान निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों ने भी गुलाबी सुंडी के नियंत्रण और प्रबंधन को लेकर महत्वपूर्ण सुझाव दिए। सेमिनार के समापन पर सभी के सुझावों को एकत्रित कर गुलाबी सुंडी को लेकर भविष्य की रणनीति तैयार करने के लिए आह्वान किया। सेमिनार में विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास, डॉ. नीरज, डॉ. सतीश खोखर, डॉ. अनिल यादव सहित कृषि वैज्ञानिकों एवं कृषि विभाग के अधिकारियों ने हिस्सा लिया।

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार टूडे	3009.2021	---	---

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जीवन आधार	03.10.2021	--	--

हकृवि ने ज्वार, सरसों व मूंग की उन्नत किस्मों को किसानों तक पहुचानें के लिए के लिए किया नामी कंपनियों से समझौता

मूंग की एमएच 1142 व ज्वार की सीएसवी 44 एफ व सरसों की आरएच 725 किस्मों के लिए हुआ समझौता

हिसार,

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों के बीज अब न केवल हरियाणा बल्कि देश के अन्य प्रदेशों में भी किसानों को आसानी से उपलब्ध हो जाएंगे। इसके लिए विश्वविद्यालय ने पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप के तहत तकनीकों व्यवसायीकरण को बढ़ावा देते हुए देश की दो प्रमुख कंपनियों से समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा किए गए शोध किसानों तक ज्यादा से ज्यादा पहुंचना चाहिए ताकि उन्हें उन्नत किस्मों का बीज व तकनीकी समय पर उपलब्ध हो सके। इसलिए इस तरह के समझौते पर हस्ताक्षर कर विश्वविद्यालय का प्रयास है कि यहां से विकसित उन्नत किस्मों व तकनीकों को अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचाया जा सके। इसके लिए विश्वविद्यालय निरंतर प्रयासरत है। समझौते के तहत विश्वविद्यालय द्वारा विकसित मूंग की एमएच-1142, ज्वार की सीएसवी 44 एफ व सरसों की आरएच 725 किस्मों के लिए हुआ समझौता है। इन किस्मों का बीज तैयार कर कंपनियां किसानों तक पहुंचाएंगी ताकि किसानों को उन्नत किस्मों का विश्वसनीय बीज मिल सके और उनकी पैदावार में इजाफा हो सके।

इन कंपनियों के साथ हुआ है समझौता

दक्षिण भारत की महाराष्ट्र के पुणे की कंपनी एग्री स्टार (यू लिंक एग्री टेक प्राइवेट लिमिटेड, पुणे) के साथ सरसों की किस्म आरएच 725 के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। कंपनी की तरफ से डॉ. देवराज आर्य, वाइस प्रेसीडेंट फार्म सोल्यूशन ने हस्ताक्षर किए। दूसरा मेराज देव सीटेक, गुरुग्राम के साथ समझौता हुआ है जिसमें कंपनी की ओर से डॉ. जयपाल ने हस्ताक्षर किए। इस कंपनी के साथ मूंग की एमएच 1142 व ज्वार की सीएसवी 44 एफ के लिए समझौता हुआ है। इन दोनों के साथ विश्वविद्यालय की ओर से समझौता ज्ञापन पर एचएयू की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने हस्ताक्षर किए हैं।